स्रोत विज्ञान एवं टेक्नॉलॉजी फीचर्स

RNI REG. NO: MPHIN/2007/20200

# सर एम. विश्वेश्वरैया

मोक्षगुंडम विश्वेश्वरैया का जन्म तत्कालीन मैसूर रियासत के कोलार जिले के चिकबल्लापुर ताल्लुका में 15 सितंबर 1861 को हुआ था जो अब कर्नाटक राज्य में है। जब वे 15 वर्ष के थे तभी इनके पिता का देहांत हो गया। विश्वेश्वरैया ने अपनी प्रारंभिक शिक्षा चिक्कबल्लापुर से, हाईस्कूल बैंगलूर से और बी.ए. मद्रास विश्वविद्यालय से किया। बाद में इन्होंने कॉलेज ऑफ साइंस, पुणे से सिविल इंजीनियरिंग की पढ़ाई की। इंजीनियरिंग के बाद विश्वेश्वरैया ने पी.डब्लू.डी. मुम्बई में नौकरी की। बाद में इन्हें भारतीय सिंचाई आयोग से बुलावा आया। दक्कन क्षेत्र में इन्होंने सिंचाई की एक अत्यंत जटिल प्रणाली लागू की। इन्होंने विशेष किस्म के फ्लड गेट का डिज़ाइन तैयार कर उसका पेटेंट कराया। इसे पहली बार 1903 में पुणे के समीप खड़कवासला जलाशय में अपनाया गया। ये गेट बांध को बिना क्षति पहुंचाए बाढ़ के ज़्यादा पानी को रोकने के अनुकूल बनाते थे।

हैदराबाद को बाढ़ से बचाने के लिए बाढ़ सुरक्षा तंत्र तैयार करके वे जन नायक बन गए। उन्हीं के प्रयासों से विशाखापट्टनम बंदरगाह को समुद्री कटाव से बचाने की व्यवस्था भी बनाई गई।

मैसूर राज्य के लिए किए गए कामों के लिए इन्हें 'आधुनिक मैसूर के जनक' कहा जाता है। मैसूर रियासत में मैसूर सोप फैक्ट्री, पैरासिटॉइड लैबोरेटरी, भद्रावती आयरन एण्ड स्टील वर्क्स, श्री जयचामराजेन्द्र पॉलीटेक्निक इंस्टीट्यूट, बैंगलोर एग्रीकल्चरल यूनिवर्सिटी, स्टेट बैंक ऑफ मैसूर, सेंचुरी क्लब, मैसूर चेम्बर ऑफ कामर्स जैसी अनेक संस्थाओं की स्थापना का श्रेय विश्वेश्वरैया को ही जाता है।

सन् 1908 में स्वैच्छिक सेवानिवृत्ति लेकर वे मैसूर राज्य के दीवान बने। दीवान रहते हुए इन्होंने मैसूर के विकास के ढेरों काम किए। बैंगलोर में 1917 में शासकीय इंजीनियरिंग कॉलेज की स्थापना करवाई जो भारत के पहले-पहल इंजीनियरिंग कॉलेजों में से एक था। इसे अब यूनिवर्सिटी विश्वेश्वरैया कॉलेज ऑफ इंजीनियरिंग कहा जाता है।

इन्हें ब्रिटिश सरकार द्वारा नाइट की उपाधि से और भारत सरकार द्वारा भारत रत्न से सम्मानित किया गया। इनके सम्मान में अनेकों संस्थाओं की स्थापना की गई - विश्वेश्वरैया टेक्नॉलॉजिकल यूनिवर्सिटी, बेलगाम, कर्नाटक, यू.वि.सी.ई. बैंगलोर, विश्वेश्वरैया इंस्टीट्यूट ऑफ टेक्नॉलॉजी, बैंगलोर, विश्वेश्वरैया नेशनल इंस्टीट्यूट ऑफ टेक्नॉलॉजी, नागपुर, विश्वेश्वरैया इंडस्ट्रियल एण्ड टेक्नॉलॉजिकल म्यूज़ियम, आयरन एण्ड स्टील लिमिटेड, कॉलेज ऑफ इंजीनियरिंग पुणे।

आधुनिक युग की कल्पना करने और उसे साकार रूप देने के प्रयासों में लगे इस इंजीनियर व दृष्टा का निधन 14 अप्रैल 1962 को हुआ।

प्रकाशक, मुद्रक सी.एन. सुब्रह्मण्यम की ओर से निदेशक एकलव्य फाउण्डेशन द्वारा एकलव्य, ई-10 शंकर नगर, बी.डी.ए. कॉलोनी, शिवाजी नगर, भोपाल - 462016 (म.प्र.) से प्रकाशित तथा आदर्श प्राइवेट लिमिटेड, इंदिरा प्रेस कॉम्पलेक्स, एम.पी. नगर, ज़ोन-1 भोपाल (म.प्र.) 462 011 से मुद्रित। सम्पादक: डॉ. सुशील जोशी